

विषय-सूची

	पृष्ठ
पुरोवाक् - प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	iii
1. दक्षिण भारत की प्राकृत पाण्डुलिपियों का संस्कृत से सम्बन्ध प्रेम सुमन जैन, श्रवणबेलगोला	1
2. प्राकृतव्याकरणेषु संस्कृतव्याकरणस्य प्रभावः श्रीयांश कुमार सिंघइ	8
3. प्राकृत पाण्डुलिपियों की वर्तमान स्थिति धर्मेन्द्र जैन	24
4. प्राकृत चूर्णियों पर संस्कृत निर्युक्तियों (निरुक्तों) का प्रभाव कमलेश कुमार जैन	30
5. प्राकृत संस्कृत विभक्तियों की तुलना ज्योतिबाबू जैन	37
6. संस्कृत और प्राकृत का भाषावैज्ञानिक सम्बन्ध वृषभ प्रसाद जैन, लखनऊ	41
7. प्राकृत साहित्य एवं आधुनिक शोध प्रविधियां हरिशंकर पाण्डेय	46
8. संस्कृत-पालि-प्राकृत-कथाओं में अन्तःसम्बन्ध रजनीश शुक्ल	51
9. प्राकृत-कोशः स्वरूप, वैशिष्ट्य एवं प्रासंगिकता वीरसागर जैन	65
10. महाराष्ट्री प्राकृत पर संस्कृत भाषा का प्रभाव महावीर प्रसाद शास्त्री	70
11. भास प्रणीत चारुदत्तम् की मागधी प्राकृत पर संस्कृत का प्रभाव सुदर्शन मिश्र	76

12. प्राकृत कारक प्रकरण का संस्कृत कारक प्रकरण में साम्य रामजीराय	84
13. भवभूति के नाटकों में प्रयुक्त प्राकृतों का वैशिष्ट्य दिनेश (J.R.F.) शोध छात्र	86
14. मृच्छकटिक में प्रयुक्त प्राकृतों का वैशिष्ट्य देवमणी पाण्डेय, जे. आर. एफ.	93
15. प्राकृत एवं वैदिक भाषा का सम्बन्ध फूलचन्द जैन प्रेमी	97
16. 'शौरसेनी प्राकृत एवं संस्कृत का सम्बन्ध' सुदीप जैन	108
17. आर्ष प्राकृत का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य (अर्द्धमागधी-प्राचीन-जैन-सूत्रों के सम्बन्ध में) तारा डागा	113
18. संस्कृत-प्राकृत भाषाओं का अन्तः सौन्दर्य अनेकान्तकुमार जैन	124
19. सिद्ध हेम शब्दानुशासन एवं पाणिनि व्याकरण की तुलना कल्पना जैन	127
20. प्राकृत स्वयंशिक्षक की पद्धति का संस्कृत से सम्बन्ध श्रीमती सरोज जैन, श्रवणबेलगोला	133
21. संस्कृत काव्यशास्त्र में प्राकृत प्रयोग हेमलता बोलिया	139
22. वररुचि विरचित प्राकृतप्रकाश व्याकरण का वैशिष्ट्य जयकुमार उपाध्ये	148
23. संस्कृत और प्राकृत : साम्य और वैषम्य देवर्षिकालानाथ शास्त्री	155
24. प्राकृत एवं संस्कृत अव्ययों का तुलनात्मक अध्ययन धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव	161
25. प्राच्य भारतीय-विद्या के विकास में जैन पाण्डुलिपियों की भूमिका राजाराम जैन	167